R.N.I. NO UPHIN@ 2013/53179
कानपुर नगर कानपुर देहात उन्नाव हमीरपुर कन्नौज इटावा उरई जालौन लखनऊ आगरा मथुरा औरैया इलाहाबाद से एक साथ प्रसारित
वर्ष - 8
अंक - 191
कानपुर गुरुवार,
27 मई 2021
पृष्ठ - 4 मूल्य
1:00

2 गज की दूरी, मास्क है जरूरी

सोशल रिपोर्टर
हिन्दी दैनिक

अमरूद की बागवानी कर लाभ कमाएं- डॉ अरुण कुमार सिंह

संजय यादव चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी. आर सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज दलीपनगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने अमरूद की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि अमरूद का फल वृक्षों की बागवानी में महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी उपयोगिता एवं पौष्टिकता को ध्यान में रखते हुए इसे गरीबों का सेव भी कहते हैं। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक है। डॉ सिंह ने बताया कि इसमें विटामिन सी संतरा से 4 से 5 गुना अधिक पाई जाती है।इसके अतिरिक्त विटामिन ए तथा विटामिन बी भी पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि इसमें लोहा, चूना तथा फास्फोरस अच्छी मात्रा में होते हैं। अमरूद की जेली तथा बर्फी भी बनाई जाती है। इसे डिब्बों में बंद करके सुरक्षित रख लिया जाता है। उन्होंने बागवान भाइयों को सलाह दी है। कि यह समय (मई-जून) अमरूद के नए बाग लगाने का उपयुक्त समय है। उन्होंने कहा कि अमरूद के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। अमरूद के नए पौधे लगाने के लिए 6म6 मीटर की दूरी पर 1म1म1 मीटर आकार के गड्ढे बना देना चाहिए। गड्ढों की खुदाई के उपरांत एक सप्ताह तक खुला छोड़ देना चाहिए।तत्पश्चात 30 से 35 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद, 250 ग्राम पोटाश तथा दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरपीरिफॉस की दवा को मिलाकर गड्ढों में डाल देना चाहिए डॉ सिंह ने बताया कि इन गड्ढों में जुलाई-अगस्त के महीने में अमरूद की उन्नत किस्में जैसे इलाहाबादी सफेदा, सरदार 49 लखनऊ श्वेता, ललिता, सेब नुमा अमरुद, इलाहाबादी सुरखा, चित्तीदार, नासिक धारदार इत्यादि उन्नतशील प्रजातियों का चयन करके गड्ढों में रोपड़ कर देना चाहिए। तत्पश्चात हल्की सिंचाई कर

दें।उन्होंने बताया कि अमरूद के पौधों को प्रथम वर्ष 10 किलोग्राम गोबर की खाद,75 ग्राम नाइट्रोजन, 65 ग्राम फास्फोरस और 50 ग्राम पोटाश प्रति एकड़ प्रतिवर्ष के हिसाब से 6 वर्ष तक ब?ा कर देना चाहिए। जिससे पौधों की वृद्धि एवं फलों की गुणवत्ता अच्छी बनी रहती है।डॉ सिंह ने बागवान भाइयों को सलाह दी है। कि उद्यान विभाग से बाग लगाने के लिए अनुदान भी मिलता है इसके लिए किसान भाई जिला उद्यान अधिकारी के कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

कानपुर । बृहस्पतिवार • 27 मई • 2021
सहारा | www.rashtriyasahara.com

अमरूद की बागवानी कर लाभ कमाएं किसान

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह ने बुधवार को अमरूद की वैज्ञानिक खेती के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसान अमरूद की बागवानी कर बेहतर लाभ हासिल कर सकते है।

सीएसए के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह की सलाह

डॉ. सिंह ने बताया कि अमरूद बागवानी में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उपयोगिता एवं पौष्टिकता को ध्यान में रख अमरूद को गरीबो का सेब भी कहा जाता है। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक है। इसमे विटामिन सी संतरा से 4 से 5 गुना अधिक पाई जाती है। इसके अतिरिक्त विटामिन ए तथा विटामिन बी भी पाया जाता है। अमरूद में लोहा, चूना तथा फास्फोरस भी अच्छी मात्रा मे होते है। अमरूद की जेली तथा बर्फी भी बनाई जाती है। इसे डिब्बो मे बंद करके सुरक्षित रख लिया जाता है।

उन्होंने बागवान किसानो को सलाह दी है कि अमरूद के नए बाग लगाने के लिए मई-जून का महीना उपयुक्त समय है। अमरूद के बाग के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। नए पौधे लगाने के लिए 6 गुने 6 मीटर की दूरी पर 1 गुने 1 गुने 1 मीटर आकार के गड्ढे बना देना चाहिए। तत्पश्चात 30 से 35 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद, ढाई सौ ग्राम पोटाश तथा दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरपीरिफॉस की दवा को मिलाकर गड्ढो मे डाल देना चाहिए।

डॉ. सिंह ने बताया कि तैयार किए गए गड्ढो मे जुलाई-अगस्त महीने मे अमरूद की

वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह।

उन्नत किस्मे जैसे इलाहाबादी सफेदा, सरदार 49, लखनऊ श्वेता, ललिता, सेब नुमा अमरूद, इलाहाबादी सुरखा, चित्तीदार, नासिक धारदार इत्यादि उन्नतशील प्रजातियो का चयन करके गड्ढो मे रोपण कर देना चाहिए। तत्पश्चात हल्की सिंचाई की जानी चाहिए।

उन्होंने कहा कि अमरूद के पौधो को प्रथम वर्ष 10 किलोग्राम गोबर की खाद, 75 ग्राम नाइट्रोजन, 65 ग्राम फास्फोरस और 50 ग्राम पोटाश प्रति एकड़ प्रतिवर्ष के हिसाब से 6 वर्ष तक देना चाहिए। इससे पौधो की वृद्धि एवं फलो की गुणवत्ता अच्छी बनी रहती है।

अनुदान की भी सुविधा : किसानो को बाग लगाने के लिए उद्यान विभाग की ओर से अनुदान भी मिलता है। इसके लिए किसान जिला उद्यान अधिकारी के कार्यालय से संपर्क कर सकते है।

वृक्षों की बागवानी में अमरूद के फल का है महत्वपूर्ण स्थान

27/05/2021

जन एक्सप्रेस/ कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी. आर सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में बुधवार को उद्यान वैज्ञानिक डॉ.अरुण कुमार सिंह ने अमरूद की वैज्ञानिक खेती के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि वृक्षों की बागवानी में अमरूद के फल का महत्वपूर्ण स्थान है इसकी उपयोगिता एवं पौष्टिकता को ध्यान में रखते हुए इसे गरीबों का सेब भी कहते हैं। इसमें संतरे से 4 से 5 गुना अधिक विटामिन सी पाया जाता है इसके अलावा इसमें विटामिन ए, विटामिन बी, लोहा, चूना और फास्फोरस भी पाया जाता है। अमरूद के बाग लगाने के लिए मई जून का समय तथा बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त रहती है। उन्होंने बताया कि अमरूद के नए पौधे लगाने के लिए 6म6 मीटर की दूरी पर 1म1म1 मीटर आकार के गड्ढो की खुदाई कर उन्हें एक सप्ताह तक खुला छोड़ देना चाहिए इसके बाद 30 से 35 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद, 250 ग्राम पोटाश तथा दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरपीरिफॉस की दवा को मिलाकर गड्ढों में डाल देना चाहिए। जुलाई-अगस्त के महीनों में इन गड्ढों में अमरूद की उन्नत किस्में इलाहाबादी सफेदा, सरदार 49 लखनऊ श्वेता, ललिता, सेब नुमा अमरुद, इलाहाबादी सुरखा, चित्तीदार, नासिक धारदार आदि उन्नतशील प्रजातियों का चयन करके गड्ढों में रोपड़ कर हल्की सिंचाई करनी चाहिए। डॉ.सिंह ने बताया कि उद्यान विभाग से बाग लगाने के लिए अनुदान भी मिलता है जिसके लिए किसान जिला उद्यान अधिकारी के कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/wo

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रे

26 मई 2021, बुधवार

www.worldkhabarexpress.media

MID DAY E-PAPER

अमरूद की बागवानी कर लाभ कमाएंः डॉ. अरुण

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दलीपनगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह ने अमरूद की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अमरूद का फल, वृक्षों की बागवानी में महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी उपयोगिता एवं पौष्टिकता को ध्यान में रखते हुए इसे गरीबों का सेब भी कहते है। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक है। डॉ. सिंह ने बताया कि इसमें विटामिन सी, संतरा से 4 से 5 गुना अधिक पाया जाता है। इसके अलावा विटामिन ए और विटामिन बी भी पाए जाते है। इसमें लोहा, चूना तथा फास्फोरस अच्छी मात्रा में होते हैं। अमरूद की जेली तथा बर्फी भी बनाई जाती है। इसे डिब्बों में बंद कर सुरक्षित रख लिया जाता है। उन्होंने बागवानों को सलाह दी है कि यह समय (मई-जून) अमरूद के नए बाग लगाने का उपयुक्त समय है। अमरूद के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुत होती है। अमरूद के नए पौधे लगाने के लिए 6-6 मीटर की दूरी पर 1-1-1 मीटर आकार के गड्ढे बना देना चाहिए। गड्ढों की खुदाई के बाद एक सप्ताह तक खुला छोड़ देना चाहिए। इसके बाद 30 से 35 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद, 250 ग्राम पोटाश और दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरपीरिफॉस की दवा मिलाकर गड्ढों में डाल देनी चाहिए। डॉ. सिंह ने बताया कि इन गड्ढों में जुलाई-अगस्त के महीने में अमरूद की उन्नत किस्में जैसे इलाहाबादी सफेदा, सरदार 49 लखनऊ श्वेता, ललिता, सेब नुमा अमरूद, इलाहाबादी सुरखा, चित्तीदार, नासिक धारदार आदि प्रजातियों का चयन कर गड्ढों में रोपड़ कर देना चाहिए। इसके बाद हल्की सिंचाई कर दें। उन्होंने बताया कि अमरूद के पौधों को पहले साल 10 किलोग्राम गोबर की खाद, 75 ग्राम नाइट्रोजन, 65 ग्राम फास्फोरस और 50 ग्राम पोटाश प्रति एकड़ प्रतिवर्ष के हिसाब से 6 वर्ष तक बढ़ा कर देना चाहिए। इससे पौधों की वृद्धि और फलों की गुणवत्ता अच्छी बनी रहती है। डॉ. सिंह ने बागवानों को सलाह दी है कि उद्यान विभाग से बाग लगाने के लिए अनुदान भी मिलता है। इसके लिए किसान, जिला उद्यान अधिकारी के कार्यालय से संपर्क कर सकते है।

लखनऊ संस्करण
गुरुवार, 27 मई, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

अमरूद की बागवानी कर लाभ कमाएं : डॉ अरुण

कानपुर। सीएसए के दलीपनगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने अमरूद की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि अमरूद का फल वृक्षों की बागवानी में महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी उपयोगिता एवं पौष्टिकता को ध्यान में रखते हुए इसे गरीबों का सेव भी कहते हैं। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक है। डॉ सिंह ने बताया कि इसमें विटामिन सी संतरा से 4 से 5 गुना अधिक पाई जाती है।इसके अतिरिक्त विटामिन ए तथा विटामिन बी भी पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि इसमें लोहा, चूना तथा फास्फोरस अच्छी मात्रा में होते हैं। अमरूद की जेली तथा बर्फी भी बनाई जाती है। इसे डिब्बों में बंद करके सुरक्षित रख लिया जाता है। यह समय (मई-जून) अमरूद के नए बाग लगाने का उपयुक्त समय है। उन्होंने कहा कि अमरूद के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। अमरूद के नए पौधे लगाने के लिए 6×6 मीटर की दूरी पर 1×1×1 मीटर आकार के गड्ढे बना देना चाहिए। गड्ढों की खुदाई के उपरांत एक सप्ताह तक खुला छोड़ देना चाहिए।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:149 | देहरादून, बुधवार, 26 मई, 2021 | पृष्ठ:08

अमरूद की बागवानी कर लाभ कमाएं किसान: डॉ अरुण कुमार

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय दलीपनगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने अमरूद की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी है उन्होंने बताया कि अमरूद का फल वृक्षों की बागवानी में महत्वपूर्ण स्थान है इसकी उपयोगिता एवं पौष्टिकता को ध्यान में रखते हुए इसे गरीबों का सेब भी कहते हैं यह स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक है डॉ सिंह ने बताया कि इसमें विटामिन सी संतरा से 4 से 5 गुना अधिक पाई जाती है इसके अतिरिक्त विटामिन ए तथा विटामिन बी भी पाए जाते हैं उन्होंने बताया कि इसमें लोहा, चूना तथा फास्फोरस अच्छी मात्रा में होते हैं अमरूद की जेली तथा बर्फी भी बनाई जाती है इसे डिब्बों में बंद करके सुरक्षित रख लिया जाता है उन्होंने बागवान भाइयों को सलाह दी है कि यह समय (मई–जून) अमरूद के नए बाग लगाने का उपयुक्त समय है उन्होंने कहा कि अमरूद के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है अमरूद के नए पौधे लगाने के लिए 6×6 मीटर की दूरी पर 1×1×1 मीटर आकार के गड्ढे बना देना चाहिए गड्ढों की खुदाई के उपरांत एक सप्ताह तक खुला छोड़ देना चाहिए तत्पश्चात

30 से 35 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद, 250 ग्राम पोटाश तथा दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरपाइरीफॉस की दवा को मिलाकर गड्ढों में डाल देना चाहिए डॉ सिंह ने बताया कि इन गड्ढों में जुलाई–अगस्त के महीने में अमरूद की उन्नत किस्में जैसे इलाहाबादी सफेदा, सरदार 49 लखनऊ श्वेता, ललित, सेब नुमा अमरूद, इलाहाबादी सुरखा, चित्तीदार, नासिक धारदार इत्यादि उन्नतशील प्रजातियों का चयन करके गड्ढों में रोपड़ कर देना चाहिए तत्पश्चात हल्की सिंचाई कर दें उन्होंने बताया कि अमरूद के पौधों को प्रथम वर्ष 10 किलोग्राम गोबर की खाद, 75 ग्राम नाइट्रोजन, 65 ग्राम फास्फोरस और 50 ग्राम पोटाश प्रति एकड़ प्रतिवर्ष के हिसाब से 6 वर्ष तक बढ़ा कर देना चाहिए जिससे पौधों की वृद्धि एवं फलों की गुणवत्ता अच्छी बनी रहती है डॉ सिंह ने बागवान भाइयों को सलाह दी है कि उद्यान विभाग से बाग लगाने के लिए अनुदान भी मिलता है इसके लिए किसान भाई जिला उद्यान अधिकारी के कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।